IJAER/September-October-2019/Volume-8/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

# उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका पर अध्ययन

**Nandita Shukla**
Research Scholar
Dept. of Economics
Himalayan University, Itanagar

**Dr. Anurag Agarwal**
Research Guide
Dept. of Economics
Himalayan University, Itanagar

## सार

"नारी" एक महत्वपूर्ण घटक है, न केवल किसी परिवार, समाज या राष्ट्र की संरचनात्मक और कार्यात्मक इकाइयाँ, बल्कि संपूर्ण मानव प्रणाली की संरचनात्मक और कार्यात्मक इकाइयाँ भी। किसी भी परिवार, समाज या राष्ट्र के समग्र विकास की रणनीति स्वाभाविक रूप से त्रुटिपूर्ण और असंभव है यदि यह महिलाओं के सही विकास के लिए जिम्मेदार नहीं है। यदि अवसर दिया जाए तो महिलाओं में सामाजिक उन्नति के सभी पहलुओं में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता है।

जिस समाज या राष्ट्र ने अपनी क्षमता को स्वीकार किया है और उसके विकास की प्रक्रिया में उनके योगदान को स्वीकार किया है, वह समाज या राष्ट्र है जो अब विकास के उच्चतम स्तर तक पहुंचने के कगार पर है। दूसरी ओर, एक समाज या राष्ट्र जो महिलाओं की क्षमता की उपेक्षा करता है और लैंगिक भेदभाव के आधार पर अपनी विकास रणनीतियों को आधार बनाता है, वह अभी भी प्रगति के पथ पर पिछड़ रहा है।

यह अध्ययन मूल रूप से वर्णनात्मक और विस्तृत प्रकृति का है और इस अध्ययन का केंद्र बिंदु महिलाओं के लिए सरकार द्वारा जारी विविध योजनाओं के बारे में जानना है।

***मुख्य शब्दः–*** *विकास, रणनीति, योजना*

## 1. परिचय

हमारे देश में अधिकांश महिलाएं अपने लिए उपलब्ध अधिकारों और अवसरों का उपयोग करने में असमर्थ हैं, इस तथ्य के बावजूद कि शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और रोजगार जैसे कई महत्वपूर्ण लक्ष्यों को विभिन्न प्रकार के विभिन्न के तहत केंद्रित किया गया है। महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए योजनाएं जिस सामाजिक मॉडल में महिलाएं राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम हैं, वह अभी तक हमारे समाज में विकसित नहीं हुई है, जो अभी भी हमारे समाज की ओर से एक विफलता है।

समाज सुधारकों द्वारा महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन लाने के निरंतर प्रयास किये गये और इसके विरूद्ध सामाजिक व वैयक्तिक स्तर पर अनेक आन्दोलन प्रारम्भ हुए जिनमें से प्रमुख महिलाओं को शिक्षित किए जाने का था। जिसके फलस्वरूप स्त्री शिक्षा पर बल दिया गया स्त्रियों में शिक्षा के प्रचलन के कारण अपने अधिकारों के प्रति चेतना व जागरूकता का समावेश हुआ। उनकी मानसिकता बदली उन्हें पुरूषों द्वारा किये गये शोषण एवं अमानवीय अत्याचारों का बोध हुआ उन्होंने इसके विरूद्ध समान अधिकारों के लिए आवाज उठायी और वे प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के समान अधिकारों की मांग करने लगी। उनमें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की क्षमता का विकास हुआ और परम्परा से चली आ रही पुरूषों की अधीनता कम हुई, इन समस्त नवीन एवं क्रान्तिकारी परिवर्तनों से स्त्रियों की स्थिति में पर्याप्त अन्तर आया। समाज एवं परिवार में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी और वे घर एवं परिवार के प्रांगण तक ही सीमित न रहकर बाहर के सामाजिक दायरे में पदार्पण करने लगी। आज स्त्रियां शिक्षित होकर केवल गृहकायों तक सीमित नहीं है अपितु अन्य विभिन्न क्षेत्रों, में भी महत्वपूर्ण भूमिकायें ग्रहण किये हुये हैं और विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करते हुये परिवार एवं समाज में प्रतिष्ठा एवं सम्मान को प्राप्त करने में समर्थ हुई। शिक्षा के फलस्वरूप ही वे राजनैतिक आर्थिक–सामाजिक आदि क्षेत्रों में वे पुरूषों के समकक्ष पदों एवं भूमिकाओं का सफल निर्वहन कर रही हैं। आर्थिक क्षेत्र में भी महिलाओं की भूमिका बढ़ती जा रही है। विश्व के सबसे धनी तथा विश्व के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में महिलाओं का नाम आने लगा है। अब किसी राष्ट्र, किसी राज्य, किसी समाज तथा किसी अर्थव्यवस्था का विकास महिलाओं की सहभागिता के बिना सम्भव नहीं है।

विश्व के तीसरे देश अर्थात् विकासशील देश द्रुतगति से औद्योगीकृत हो रहे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप संगठित एवं औपचारिक क्षेत्रों में शिक्षित एवं प्रशिक्षित वर्ग का निरन्तर विकास हो रहा है। इसी प्रकार हमारे दैनिक जीवन से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में भी निरन्तर श्रम शक्ति का अभ्युदय औद्योगीकरण की प्रक्रिया का परिणाम माना जाता है।

विकासशील समाजों में उद्योगों तथा उद्यमियों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। उद्योगों के स्वरूप पर, उद्यमी की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि तथा मनोवृत्तियों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। मिश्रित तथा पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उद्यमिता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य के रूप में स्वीकार किया गया है। प्राचील काल में महिलाओं का कार्यक्षेत्र केवल घर तक ही सीमित था लेकिन आज महिलायें भी पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर निरन्तर कार्य कर रही हैं। अपनी रूचि तथा बौद्धिक योग्यता के आधार पर विभिन्न जातियों की महिला उद्यमी अनेक प्रकार के व्यवसायों का चुनाव कर परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करने में पुरूष की बराबर की सहभागी हैं ।

वास्तव में वर्तमान भारतीय औद्योगिक अर्थव्यवस्था में 'महिला उद्यमी' नाम एक नया महत्वपूर्ण आर्थिक वर्ग विकसित हो रहा है, जो विभिन्न वर्गों के अधिकार में रहने वाली भूमि, श्रम तथा पूँजी इत्यादि को संगठित करके उन्हें उत्पादन कार्य में लगाता है। औद्योगीकरण से उत्पन्न हुयी नयी परिस्थितियों में नारी आज केवल श्रृंगार, आनन्द और उपभोग की वस्तु मात्र नहीं है, न ही केवल अपने स्वामी की दया की दास है वरन् उसका स्वयं का व्यक्तित्व है और वह समाज में एक स्वतन्त्र भूमिका निभा रही है। नारी आन्दोलनो ने पुरूषों के विशेष अधिकार मुख्यतः उसकी आर्थिक एवं राजनैतिक

भूमिका पर प्रहार किया है। आज नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। आज वह दोहरी भूमिका का निर्वाह कर रही है घर और बाहर दोनों ही स्थानों पर अलग–अलग प्रकार की भूमिकाओं का निर्वहन कर रही है जिसके कारण कभी–कभी नारी को भूमिका–द्वन्द्व की स्थिति से भी गुजरना पड़ता है।

विगत दो–तीन दशकों में भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक संरचना में महिलाओं की प्रस्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन आये हैं। वर्तमान में केवल आर्थिक रूप से कमजोर और विवश महिला ही उद्यमी के रूप में विकसित नहीं हो रही है अपितु वे महिलायें भी उद्योग स्थापित करती दिखायी दे रही हैं जो एक ओर तो उपयोगी सामाजिक जीवन व्यतीत करना चाहती हैं तथा अपनी योग्यता और ज्ञान का उपयोग करना चाहती हैं वहीं दूसरी ओर पारिवारिक आय में वृद्धि भी उनके लिये महत्वपूर्ण प्रेरक है।

महिलायें परिवार की अर्थव्यवस्था में सहयोग करते हुए सहज ही अपने शहर के विकास में सहयोगी बन जाती हैं। किसी अर्थव्यवस्था के निर्माण में महिलाओं की भूमिका ठीक उसी प्रकार महत्वपूर्ण होती जा रही है जिस प्रकार घर परिवार के निमार्ण में। प्रस्तुत शोध अध्ययन में महिलाओं की आर्थिक भूमिका का अध्ययन जनपद सीतापुर के सन्दर्भ में किया गया है। जनपद सीतापुर आर्थिक–सामाजिक रूप से पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। इसको स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका के कारण शहीदों की नगरी भी कहा जाता है। अपराध दर अधिक होने के कारण जनपद सीतापुर आर्थिक दृष्टि से अपेक्षानुसार विकसित नहीं हो सका है। यहॉ के सम्पन्न लोग भी अपने बच्चों को अन्य शहरों में स्थापित करते हैं तथा अपने व्यवसाय का अधिकांश विस्तार दूसरे शहरों में करते हैं किन्तु पिछले कुछ वर्षों से सामाजिक जागरूकता बढ़ने के साथ जनपद के आर्थिक क्रियाकलापों में महिलाओं का योगदान बढ़ा है। अब महिलायें उद्यमी में परिवर्तित हो रही हैं। अनेक सामाजिक बाधाओं के होते हुये भी महिलाये जनपद के आर्थिक विकास में निरन्तर योगदान कर रही हैं और उद्यमिता के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना रही हैं। जनपद सीतापुर की जटिल भौगोलिक संरचना तथा असुरक्षित एवं पिछड़े सामाजिक वातावरण में भी महिलाओं का योगदान आर्थिक क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। वे अनेक समस्याओं का सामना करते हुए अपनी भूमिका को महत्वपूर्ण बनयो हुए हैं। वे किन–किन समस्याओं का सामना कर रहीं हैं और किस प्रकार आर्थिक विकास में योगदान कर रही हैं? यह विषय इस अध्ययन की शोधात्मक समस्या है।

औद्योगिक क्रान्ति बाद कार्यशील महिलाओं की जीवन में भी क्रान्ति आई है। औद्योगिक व्यावसागिक तथा सेवा क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता बढ़ी है। अब महिलायें घरेलू, सेविकाएं न रहकर अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ स्तम्भ बन गई है। महिलाओं की सहनशीलता, कार्य के प्रति निष्ठा, जागरूगता, अनुशासनबद्धता आदि गुणों ने आर्थिक क्रिया कलापों में उनकी सक्रियता को बढ़ाया है। महिलाओं की उद्यमशीलता ने उनको तो आत्मनिर्भर बनाया ही है साथ में व्यावसायिक एवं औद्योगिक विकास की दर को भी बढाया है क्योंकि महिला उद्यमी, पुरूष उद्यमियों की अपेक्षा अधिक कर्तव्यनिष्ठ एवं सफल सिद्ध हुई हैं। सरकार के सहयोगात्मक तथा प्रोत्साहनात्मक व्यवहार के कारण महिला उद्यमियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है और इन्होंने समर्पण तथा ईमानदारी के साथ परिश्रम करके अर्थव्यवस्था के निर्माण में स्वयं को

सक्रिय सहभागी बनाया है। इस प्रकार औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका अति महत्वपूर्ण हो गई है।

## 2. अध्ययन के मुख्य उद्‌देश्य

1. महिला उद्यमिता की अवधारणा पर प्रकाश डालना।
2. महिला उद्यमियों के उपलब्ध शासकीय योजनाओं का अध्ययन करना।
3. शासकीय योजनाओं के प्रति महिला उद्यमियों की जागरूकता एवं तत्परता को ज्ञात करना।

## 3. शोध प्रविधि :—

यह अध्ययन पद्धति महिलाओं की बेहतरी और विकास के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं के प्रकारों को जानने पर आधारित है। महिलाओं के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई विविध योजनाओं पर समझ के स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ अध्ययन प्रकृति में वर्णनात्मक है।

प्रस्तुत अनुसंधान सूक्ष्मस्तरीय सर्वेक्षण पर आधारित विश्लेषणात्मक अध्ययन है, जिसके अंतर्गत इस तथ्य का निर्वचन किया गया है कि जनपद सीतापुर की अर्थव्यवस्था में महिलाओं का क्या योगदान है?

## 4. विश्लेषण

भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत निर्धनता निवारण हेतु कई कायक्रमों को सरकार ने लागू किया है। नियोजन की प्रारम्भिक अवधि में निर्धनता निवारण के लिए प्रत्यक्ष रूप से कोई विशेष कार्यक्रम नहीं चलाये गये थे और सामुदायिक विकास योजना, राष्ट्रीय प्रसार सेवा कार्यक्रम, कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र इत्यादि के विस्तार एवं विकास के माध्यम से ही निर्धनता की समस्या का समाधान करने का प्रयास किया गया था। लेकिन जब इन प्रयासों का कोई सार्थक परिणाम नहीं निकला और समाज में आय एवं सम्पत्ति के वितरण की विषमताओं में कमी नहीं हुई तब चौथी पंचवर्षीय योजना से इस समस्या पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। चौथी पंचवर्षीय योजना में निर्धनता उन्मूलन हेतु जिन कार्यक्रमों को लागू किया गया।

### 4.1 महिला उद्यमियों हेतु शासन द्वारा प्रयोजित योजनाएं :—

महिला उद्यमियों के लिए अनेक प्रकार की शासकीय योजनाएं संचालित हैं जो प्रायोजन के आधार पर दो प्रकार की हैं— केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाएं तथा राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाएं।

**(1) राष्ट्रीय महिला कोष :–**

1. मुख्य उद्देश्य गरीब महिलाओं (बीपीएल) को आय अर्जित करने के योग्य बनाने के लिए वित्तीय सहायता और छोटे ऋण उपलब्ध कराना है, ग्रामीण क्षेत्रों में भी और शहरी क्षेत्रों में भी।
2. वित्तीय सहायता ठोस और सरकारी संगठनों, स्वैच्छिक संगठनों, सहकारी समितियों या महिला विकास निगम/मण्डलों के माध्यम से उपलब्ध कराई जाती है।
3. महिलाओं की उधार एवं बचत समितियां बनाने में मदद करता है जिन्हें स्वावलम्बन समूह भी कहते हैं।

**(2) स्वयंसिद्धा योजना :–**

यह योजना महिलाओं के समग्र विकास के लिए चलाई जा रही है। इस योजना का मूल उद्देश्य महिलाओं की शक्ति/उत्पादकता, आय तथा ज्ञान में वृद्धि करना है।

**(3) महिलाओं के लिए रोजगार एवं आय जनक यूनिट (नोराड) :–**

इस योजना के अन्तर्गत रोजगार सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पारम्परिक तथा गैर पारम्परिक व्यवसाय/पेशे में प्रशिक्षण देने के लिए महिलाओं को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है यथा इलेक्ट्रोनिक्स, घड़ी मरम्मत, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, तैयार वस्त्र, सचिवालय व्यवहार, काशीदाकारी आदि।

**(4) महिलाओं के लिए प्रशिक्षण तथा रोजगार कार्यक्रमों को सहायता (स्टेप)–**

कार्याभिमुख परियोजनाओं के माध्यम से जो महिलाओं को बड़ी संख्या में नियुक्त करें, महिलाओं के लिए कुशलताओं के उन्नयन और स्थाई रोजगार के लिए प्रशिक्षण उपलब्ध कराना। योजना में रोजगार के पारम्परिक क्षेत्र शामिल हैं यथा कृषि, लघु पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन, हथकरघा, दस्तकारी, खादी ग्रामोद्योग, रेशम उत्पादन, सामाजिक वानिकी और बंजर भूमि का विकास।

**(5) शिक्षा द्वारा महिलाओं का सशक्तिकरण–**

शिक्षा के क्षेत्र में असमानता को दूर करने की जानकारी, लैंकिग जोगरूकता, लैंगिक संवेदिता आदि पर राष्ट्रीय नीति का एक महत्वपूर्ण अंग यह अपेक्षा करता है कि महिलायें अपनी समस्याओं को समझें और समाधान निकालें। यह ऐसे मंत्र के निर्माण में सहायता करता है जहां महिलायें सामूहिक रूप से अपनी समस्याओं का विश्लेषण कर सकें और अनुभव को बांट सकें।

**(6) महिलाओं के लिए अल्पावधि शिक्षा पाठ्यक्रम–**

1. विरत छात्राओं को अपनी विद्यालय की शिक्षा पूरी करने के लिए प्रोत्साहित करना।

**2.** महिलाओं को शिक्षा देकर और उद्यमिता सिखाकर सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र बनाना।

**(7) महिलाओं तथा लड़कियों के लिए अल्पावधि गृह :–**

1. अस्थायी आश्रय स्थल बनाना और उन महिलाओं तथा लड़कियों की मदद करना जिन्हें समाज से कोई सहायता नहीं मिलती।

2. महिलाओं/लड़कियों के प्रशिक्षण, निपुणता तथा मार्ग प्रदर्शन द्वारा उनका सामाजिक–आर्थिक पुनर्वास।

**(8) महिला व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम :–**

यह योजना सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा संचालित है। इसका उद्‌देश्य है 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की जरूरतमंद महिलाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना।

**4.2 महिला उद्यमियों हेतु उ0प्र0 सरकार द्वारा प्रायोजित योजनायें :–**

**(1) संशोधित पेंशन योजना :–**

थ्वकलागों, निराश्रित महिलाओं को तथा भूतपूर्व सैनिकों को विधवाओं को 1 अप्रैल 2005 से नई दरों पर पेंशन देना।

**(2) हस्तशिल्पी क्रेडिट योजना :–**

19 दिसम्बर 2004 से बुनकरों एवं हस्तशिल्पियों को आसान शर्तों पर ऋण उपलब्ध कराना।

**(3) दस्तकारी हाट :–**

बरेली मण्डल में 12 फरवरी 2006 में तत्कालीन नगर विकास मंत्री ने 20 लाख रूपयकी लागत से जनपद सीतापुरदस्तकारी हाट का शिलान्यास किया। इस दस्तकारी हाट के माध्यम से जनपद सीतापुरके दस्तकारों एवं उद्यमियों को प्रोत्साहन तो मिलेगा ही साथ ही उद्यमियों को उनके उत्पादों का उचित एवं लाभकारी मूल्य भी मिलेगा। इस प्रकार जनपद सीतापुर में महिला उद्यमियों को लाभ प्रदान करने वाली अनेक केन्द्रीय एवं प्रादेशिक योजनायें हैं।

**4.3 योजनाओं के प्रति महिला उद्यमियों की जागरूकता एवं तत्परता :–**

घर में महिला को पारिवारिक कर्त्तव्यों को पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाना पड़ता है जबकि कार्यस्थल पर भी उसे अपनी योग्यता सिद्ध करनी पड़ती है। क्योंकि आज भी आर्थिक संसाधनों पर पुरूषों का अधिकार है। आज भी परिवार की सम्पत्ति पर पुरूषों का ही अधिकार रहता है। इसए महिला उद्यमियों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने अधिकारों और हितों के प्रति जागरूक हों एवं संगठित हों जिससे अपने प्रति होने वाले भेदभावपूर्ण व्यवहार का विरोध कर सकें।

महिलायें अपने हितों की रक्षा तभी कर सकती हैं जब वे शिक्षित हों। शिक्षा के द्वारा वे समाज में अपने लिए स्थान सुनिश्चित कर सकती हैं तथा आर्थिक क्षेत्र में पुरूषों के एकाधिकार को चुनौती दे सकती हैं।

## 5. निष्कर्ष

भारत में वैदिक युग में महिलाओं की स्थिति बहुत ही सम्मानजनक थी। यह बात एक प्रसिद्ध लोकोक्ति से भी स्पष्ट होती है– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' लेकिन धीरे–धीरे महिलाओं की स्थिति में बदलाव आया और उन्हें ''अवला'' का दर्जा प्राप्त हो गया। यद्यपि आधुनिक युग में, महिलाओं ने राजनीति, खेल एवं विज्ञान आदि अनेक क्षेत्रों में अपनी क्षमता का लोहा मनवाया है। तथापि उद्योग या व्यवसाय के क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता अपेक्षाकृत कम है। फिर भी पहले की अपेक्षा आज की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है और महिलायें अब इस क्षेत्र में भी काफी आगे बढ़ रही हैं। इन्द्रा नुई, अनुआगा, परवीन वारसी, वन्दना लूथरा आदि नाम इसी श्रृंखला की कुछ कड़ियां है।

उद्यमशीलता, देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जाता है। सामान्यतः उद्यमी वह व्यक्ति कहलाता है जो एक नया व्यवसाय प्रारम्भ करता है, और उसका उद्देश्य हमेशा लाभ प्राप्त करना होता है। उद्यमशीलता का विकास स्वतः नहीं हुआ बल्कि इसके विकास में अनेक आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक कारक सहायक होते हैं। तकनीकी की गुणवत्ता, मात्रा तथा श्रम और पूंजी की उपलब्धता भी उद्यमशीलता के विकास को प्रभावित करती है। सरकार मूल सुविधायें, सेवायें और विभिन्न प्रकार की छूट और प्रोत्साहन देकर उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करती है।

यह अध्ययन मूल रूप से महिलाओं की बेहतरी के लिए सरकार द्वारा जारी प्रमुख प्रकार की नीतियों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है और जिसके लिए सरकार ने महिलाओं को उन नीतियों के बारे में जागरूकता के लिए आवश्यक सहायक कदम भी उठाए हैं। एक महिला की स्थिति जितनी बेहतर होगी, राज्य या देश की स्थिति उतनी ही बेहतर होगी। ये नीतियां महिलाओं को आवश्यक कार्रवाई करने में मदद करती हैं (जो अध्ययन करना चाहती हैं वे कर सकती हैं, जो अपने सूक्ष्म व्यवसाय के लिए ऋण लेना चाहती हैं) और खुद को स्थापित करने और राज्य की अर्थव्यवस्था के विकास में सहायता करती हैं।

## सन्दर्भ सूची

1. सेन, गीता एवं सेन, चिरंजीव : वुमैन्स डोमैस्टिक वर्क एण्ड इकोनोमिक ऐक्टिविटी, रिजल्ट फ्रॉम द नेशनल सैम्पल सर्वे, वर्किंग पेपर न0 147 सेन्टर फॉर डवलपमैन्ट स्टडीज, 1984.

2. गिरी वी0वी0 : प्रॉब्लम इन इण्डियन इंडस्ट्री, एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1999.

3. मुकर्जी आर0के0के0 : दि इण्डियन वर्किंग क्लास, 1998.

4. डेविस कीथ : हयूमन रिलेशन्स एट वर्क : दि डायनेमिक्स ऑफ आर्गेनाइजेशन बिहेवियर, इंटरनेशनल स्टूडेन्ट एडीशन, 1989.

5. मूर, डब्ल्यू0ई0 : इंडस्ट्रियल रिलेशन्स एण्ड दि सोशियल आर्डर, दि मैकमिलन कम्पनी, 1997.

6. स्नाइडर, इ0पी0 : इंडस्ट्रियल सोशियोलॉजी मैकगाहम बुक कम्पनी, न्यूयार्क, 1980.

7. मोर्स, एन0सी0 : सैटिसफैक्शन इन दि व्हाइट कॉलर जॉब, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिनन प्रेस, 1986.

8. शेफर, आर0एच0 : जॉब सैटिसफैक्शन एन रिलेटेड टू नीड सैटिसफैक्शन इन वर्क, साइकोलॉजिकल मोनोग्राफ्स खण्ड 67, न0 14, 1988.

9. हर्ज वर्ग, वी0 मोसनर : दि मोटिवेशन टू वर्क, जोजन विल एण्ड सन्स, न्यूयार्क, 1994.

10. रॉस, ए0डी0 : 'दि हिन्दू फैमिली इन इट्स अरबन सेटिंग' बॉम्बे ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस 1963, पृष्ठ 198.

11. कपूर, प्रमिला : 'मैरिज एण्ड द वर्किंग वुमैन इन इण्डिया', (दिल्ली, विकास, 1996); द चेंजिंग स्टेटस ऑफ द वर्किंग वुमैन इन इण्डिया, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस, 1974.

12. बोमैन, एच0ए0 : मैरिज फॉर मार्डन्स (थर्ड एडी), न्यूयार्क, नैकवैली एण्ड को0, 1952.